कहानी

नन्ही पिहू और इंद्रधनुष वाला दिन

छोटे से शहर रंगपुरा में रहने वाली नन्ही पिहू बहुत ही खुशमिज़ाज बच्ची थी; उसकी दो चोटियाँ, आँखों में चमक और हर वक्त कुछ नया सीखने की चाहत उसे सबका प्यारा बना देती थीं, लेकिन पिहू की एक आदत थी—वह जल्दबाज़ी में काम करती थी और चीज़ें बिना सोचे-समझे कर बैठती थी, जिससे वह अक्सर मुश्किल में पड़ जाती. एक दिन स्कूल में घोषणा हुई कि 'रंगपुरा बच्चों का उत्सव' होने वाला है, जिसमें हर बच्चा अपनी मनपसंद चीज़ दिखाएगा किसी को गाना, किसी को दौड़ना, किसी को पेंटिंग, और पिहू को पेंटिंग बहुत पसंद थी. वह खुश होकर बोली, 'मैं तो सबसे बड़ा इंद्रधनुष बनाऊँगी!' लेकिन उसकी दादी ने प्यार से समझाया, 'बेटा, काम सोचकर करना, जल्दी मत करना.' पिहू ने हाँ कह तो दिया, मगर उसके मन में तो बस इंद्रधनुष ही घूम रहा था.

उत्सव से एक दिन पहले स्कूल ने बच्चों को कहा कि वे अपनी ड्राइंग क्लास में रंग चुन लें. सारे बच्चे लाइन लगाकर रंग ले रहे थे; पिहू को लगा कि धीमे चलने में उसका समय खराब हो जाएगा, इसलिए वह लाइन छोड़कर जल्दी-से रंगदान तक पहुँची और सामने रखा सबसे बड़ा रंग बॉक्स उठा लिया, बिना देखे कि वह किसी और के लिए है. उसे लगा, वाह! इतनी जल्दी मिल गया!

दूसरी तरफ उसकी सबसे अच्छी दोस्त सोनिया लाइन में खड़ी थी, जिसे वही बड़ा रंग बॉक्स मिलने वाला था क्योंकि उसे विशेष प्रतियोगिता में हिस्सा लेना था. जब सोनिया तक बात पहुँची तो रंगदान में अब बड़ा बॉक्स नहीं था; वह परेशान होकर सोचने लगी कि इतने कम रंगों से वह अपना चित्र कैसे बनाएगी. उधर पिहू बॉक्स लेकर घर गई और बिना खोले ही खुश होती रही कि उसने कितना अच्छा काम किया. रात को उसने चित्र बनाने बैठी, लेकिन जब बॉक्स खोला तो उसमें सिर्फ दो रंग निकले—नीला और पीला—बाकी सारे बाहर गिर चुके थे, यानी बॉक्स असल में खराब था! पिहू घबरा गई, क्योंकि सुबह प्रतियोगिता थी और उसके पास पूरे रंग ही नहीं थे. उसी समय दादी अंदर आईं और बोलीं, 'जल्दबाज़ी का यही हाल होता है, बेटा.' पिहू रोती हुई बोली, 'दादी, अब मैं क्या करूँ?' दादी ने कहा, 'पहले सच का सामना करो, फिर रास्ता खुद मिलेगा.' पिहू समझ नहीं पाई, लेकिन उसका दिल कह रहा था कि उसने कुछ गलत किया है.

सुबह स्कूल पहुंचकर उसने देखा कि सोनिया उदास बैठी है और छोटा-सा रंग सेट लेकर कठिनाई से इंद्रधनुष बनाने की कोशिश कर रही है, लेकिन इतने कम रंगों में रंगोली फीकी लग रही थी. पिहू को अपनी गलती समझ आ गई—उसने लाइन तोड़कर न सिर्फ गलत बॉक्स उठा लिया, बल्कि सोनिया का हक भी ले लिया. उसके दिल में हलचल होने लगी. उसने हिम्मत करके सोनिया के पास जाकर कहा, 'सोनिया, वह बड़ा रंग बॉक्स तुम्हारा था... मैंने गलती से ले लिया था, मुझे माफ़ कर दो.' सोनिया पहले तो चौंक गई, फिर बोली, 'कोई बात नहीं, गलती सब से होती है, पर तुमने मान ली, यही बड़ी बात है.' तब पिहू ने उसके साथ बैठकर अपने दोनों रंग नीला और पीला भी उसे दे दिए, और दोनों मिलकर नया तरीका निकालने लगीं. तभी पिहू की दादी की बात याद आई 'पहले सच का सामना करो, फिर रास्ता मिल जाएगा.' दोनों ने मिलकर रंगों को मिलाया, पीले और नीले को मिलाकर हरा रंग बनाया, हल्का-सा नीला मिलाकर आसमानी रंग तैयार किया, कोनों में थोड़ा पानी छिड़ककर गुलाबी जैसा शेड बनाया. और देखते-देखते उन्होंने सबसे सुंदर, लोकल, अनोखा मिलाजुला इंद्रधनुष बना लिया जो बाकी बच्चों के इंद्रधनुष से अलग और खास था. जब निर्णायक आए तो उनकी नज़र उसी इंद्रधनुष पर टिक गई; उन्होंने कहा, 'ये किसका काम है' सोनिया और पिहू दोनों ने एक साथ कहा, 'हम दोनों का!' निर्णायकों ने मुस्कुराकर कहा, 'इसमें रंगों से ज्यादा, दिल और मेहनत की चमक है,' और उन्हें पहला पुरस्कार दिया. पिहू ने सीखा कि जीतना अच्छा है, लेकिन सही रास्ते से जीतना सबसे अच्छा है. घर लौटकर उसने दादी को गले लगाया और बोली, 'दादी, आज मुझे समझ आया कि बिना सोचे-समझे काम करने से गलती ही होती है.' दादी हँसकर बोलीं, 'और गलती मान लेने से बच्चा बड़ा बनता है.' उस दिन से पिहू ने जल्दबाजी और बिना सोचे काम करने की आदत छोड़ दी, और हर काम में सोच-समझ और सच्चाई का रंग भर दिया—बिल्कुल इंद्रधनुष की तरह.

सीख

बिना सोचे किए गए काम अक्सर गलत हो जाते हैं. सही फैसले सच्चाई, धैर्य और समझदारी से ही बनते हैं.

बिंदु मिलाओ

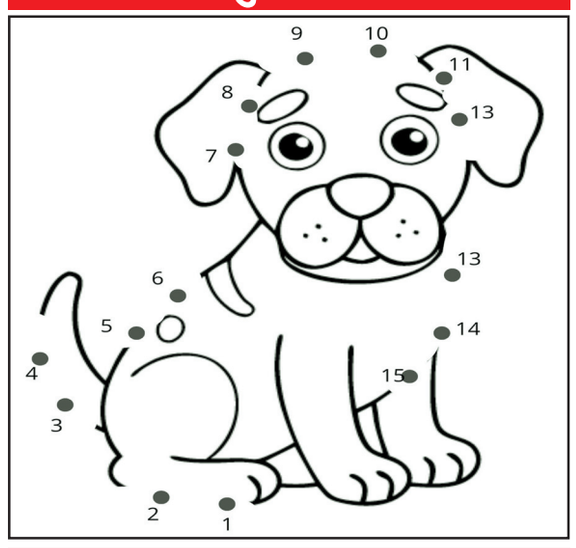

रंग भरो

प्रेरक प्रसंग

शिक्षा और समाज के सच्चे सेवक डॉ. हरिसिंह गौर

डॉ. हरिसिंह गौर भारत के उन महान लोगों में से एक थे जिन्होंने अपनी मेहनत और सोच से देश और समाज दोनों को नई दिशा दी. 1870 में सागर (मध्य प्रदेश) में जन्मे डॉ. गौर का बचपन सामान्य परिस्थितियों में बीता, लेकिन उनके अंदर पढ़ने और आगे बढ़ने की बहुत इच्छा थी. कठिनाइयों के बावजूद वे लगातार सीखते रहे और एक बड़े शिक्षाविद और कानून विशेषज्ञ बने.

उनका सबसे बड़ा और यादगार काम सागर विश्वविद्यालय की स्थापना है, जिसे आज डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय कहा जाता है. उन्होंने यह विश्वविद्यालय 1946 में बनाया और इसकी इमारतों, लाइब्रेरी और शिक्षण व्यवस्था बनाने में अपनी काफी संपत्ति लगा दी. वे चाहते थे कि हर बच्चे खासकर गरीब और दूर-दराज के—को अच्छी और सस्ती शिक्षा मिले. उनका मानना था कि

शिक्षा ही समाज को बदल सकती है, और उन्होंने इसे अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य बनाया.

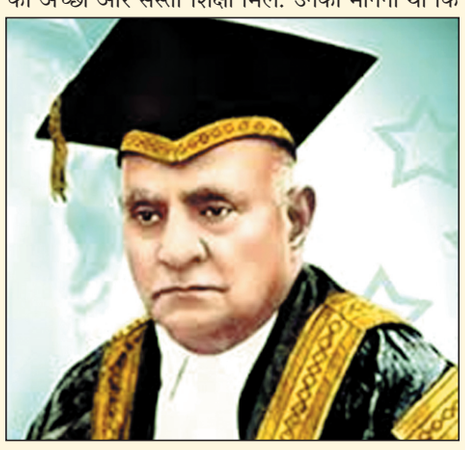

डॉ. गौर केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रहे. वे समाज में फैली बुराइयों और भेदभाव के खिलाफ थे. वे महिलाओं की शिक्षा के बड़े समर्थक थे और कहते थे कि जब तक महिलाएँ पढ़ेंगी नहीं, समाज तरक्की नहीं कर सकता. उन्होंने बराबरी, भाईचारे और इंसानियत को जीवन के मूल सिद्धांत माना. उनकी सोच आज भी हमें याद दिलाती है कि समाज तब ही मजबूत होता है जब हर व्यक्ति को समान मौके मिलते हैं. कानून के क्षेत्र में भी उनका योगदान बहुत बड़ा है. वे लंदन से बैरिस्टर बने और भारत आकर कई महत्वपूर्ण किताबें लिखीं. उनकी लिखी हुई 'हिंदू कोड' किताब आज भी कानून की पढ़ाई में महत्वपूर्ण मानी जाती है. उनकी साफ़ सोच और न्याय के प्रति निष्ठा ने भारत की विधिक शिक्षा को मजबूत आधार दिया.

डॉ. गौर एक उदार और दयालु व्यक्ति भी थे. उन्होंने अपनी संपत्ति का बड़ा हिस्सा छात्रों की मदद, विश्वविद्यालय के विकास और समाज सेवा में लगा दिया. वे हमेशा चाहते थे कि कोई भी बच्चा पैसे की कमी के कारण पढ़ाई न छोड़े. उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि अगर हम मेहनत करें, दूसरों की मदद करें और समाज के लिए कुछ सोचें, तो बड़ा बदलाव ला सकते हैं. डॉ. हरिसिंह गौर ने जो काम भारत और समाज के लिए किए, वे हमेशा याद किए जाएंगे. वे आज भी एक ऐसी प्रेरणा हैं जो बताती है कि शिक्षा, सेवा और समानता ही देश को आगे ले जाती है.

अंटार्कटिका के रोचक तथ्य

- अंटार्कटिका दुनिया का सबसे ठंडा महाद्वीप है, जहाँ का तापमान कभी-कभी -80 सेल्सियस तक गिर जाता है.
- यह पूरी तरह बर्फ़ से ढका होता है, और कुछ जगहों पर बर्फ़ की मोटाई 4-5 किलोमीटर तक होती है.
- सर्दियों में सूर्य लगभग 6 महीने तक नहीं निकलता, इसलिए दिन और रात का फर्क लगभग नहीं रहता.
- गर्मियों में सूर्य 24 घंटे दिखाई देता है और कभी पूरी तरह अस्त नहीं होता.
- अंटार्कटिका की बर्फ़ में दुनिया के ताजे पानी का लगभग 70% मौजूद है.
- यह किसी एक देश का हिस्सा नहीं है और यहाँ कोई स्थायी बस्ती नहीं है.
- अंटार्कटिका में पेंगुइन, सील और समुद्री पक्षी रहते हैं, जो ठंड में भी जीवित रह सकते हैं.
- यहाँ कुछ सक्रिय ज्वालामुखी भी हैं, जो लगातार धुआँ और राख छोड़ते रहते हैं.
- हवा यहाँ बहुत सूखी होती है और बारिश बहुत कम होती है, इसलिए इसे 'सर्द रेगिस्तान' कहा जाता है.
- कई देशों के वैज्ञानिक यहाँ रिसर्च स्टेशन बनाकर ग्लेशियर, मौसम और समुद्री जीवन पर अध्ययन करते हैं.

जानकारी

चाँद : रात का प्यारा साथी

हमारे आसमान में रात को एक सुंदर चमकता हुआ गोला दिखाई देता है, जिसे हम चाँद कहते हैं. चाँद हमारी धरती का एक प्राकृतिक उपग्रह है. इसका मतलब है कि यह हमेशा धरती के चारों ओर घूमता रहता है.

चाँद खुद रोशनी नहीं देता, इसलिए यह सीधे चमकता नहीं है. रात में यह इसलिए चमकता है क्योंकि यह सूरज की रोशनी को धरती की तरफ परावर्तित करता है. सूरज की किरणें चाँद पर पड़ती हैं और वह हमें उजाला दिखाता है.

चाँद की सतह बहुत रोचक है. यह चट्टानों और धूल से बनी है, और इसके ऊपर बड़े-बड़े गड्ढे भी हैं, जिन्हें हम क्रेटर कहते हैं. ये क्रेटर पहले उल्कापिंड के टकराने से बने. चाँद पर कोई हवा नहीं है, इसलिए यहाँ सूरज की रोशनी सीधे पड़ती है और दिन और रात का तापमान बहुत ज्यादा बदलता है. चाँद का आकार और चमक रात-दर-रात बदलती रहती है. इसे हम चाँद के फेज़ कहते हैं.

कभी यह पूरा गोल दिखता है जिसे पूर्णिमा कहते हैं, और कभी केवल आधा या छोटा अर्धचन्द्राकार दिखाई देता है. चाँद की यह बदलती हुई रूपरेखा हमारे कैलेंडर और त्योहारों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है. चाँद सिर्फ रात में ही नहीं, बल्कि पृथ्वी पर ज्वार-भाटा (सागर की लहरों का उतार-चढ़ाव) में भी मदद करता है. इसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति समुद्र की लहरों को खींचती और छोड़ती है. इसलिए समुद्र के जल स्तर में दिन-प्रतिदिन बदलाव आता है.

बच्चों, चाँद हमारे लिए न केवल एक सुंदर रात्री साथी है, बल्कि यह विज्ञान, ग्रहों और प्राकृतिक घटनाओं को समझने में भी हमारी मदद करता है. रात को आसमान में चाँद को देखना हमेशा रोमांचक और ज्ञानवर्धक होता है.

कविता

चाँद और तारे

रात हुई तो चाँद
निकाला,
तारे चमके छोटे-छोटे.
आसमान में जगमग-
जगमग,
जैसे दीपक हों कुछ मोटे.
हवा बोली लोरी प्यारी,
नींद बुलाए धीरे-धीरे.
सपनों की दुनिया
सजती,
रात की चादर ओढ़े घिरे.

बूझो तो जानें

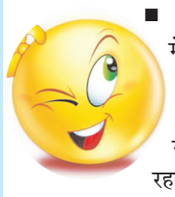

- मैं हवा में उड़ सकता हूँ, पर मेरे पंख नहीं हैं. मैं क्या हूँ?
  उत्तर: पतंग
- मेरा घर हमेशा मुँह से खुलता है, और मैं पानी में रहता हूँ. मैं क्या हूँ?
  उत्तर: मछली
- मैं काले और सफेद रंग का हूँ, और दूध देता हूँ. मैं कौन हूँ?
  उत्तर: गाय
- मैं हमेशा आगे बढ़ता हूँ, कभी पीछे नहीं जाता. मैं क्या हूँ?
  उत्तर:समय
- मैं दिन में आता हूँ, रात में छुप जाता हूँ. मैं आकाश में चमकता हूँ. मैं क्या हूँ?
  उत्तर: सूरज
- मैं छोटा हूँ, पर सबके लिए काम आता हूँ. मुझे दबाओ तो मैं बजता हूँ. मैं क्या हूँ?
  उत्तर: घंटी

हंसी-ठिठोली

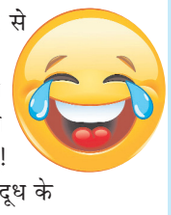

- टीचर: तुम स्कूल देर से क्यों आए?
  बच्चा: सपने में स्कूल पहुँच गया था, लेकिन रियल में अभी आया हूँ!
- बच्चा: पापा, क्या मैं दूध के साथ चाय पी सकता हूँ?
  पापा: नहीं बेटा, दूध अकेले खुश रहता है!
- मम्मी: तुम रोज़ स्कूल में क्यों सोते रहते हो?
  बच्चा: ताकि सपनों में अच्छे अंक लाऊँ!
- पप्पू: मम्मी, मैं डॉक्टर बनना चाहता हूँ.
  मम्मी: अच्छा, क्यों?
  पप्पू: ताकि अपने खिलौनों को इंजेक्शन लगा सकूँ!
- टीचर: अगर तुम्हारे पास 5 आम हैं और तुम्हारे दोस्त 2 ले ले, तो तुम्हारे पास कितने आम बचेंगे?
  बच्चा: सर, मेरे पास तो अभी भी भूख है!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर है जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

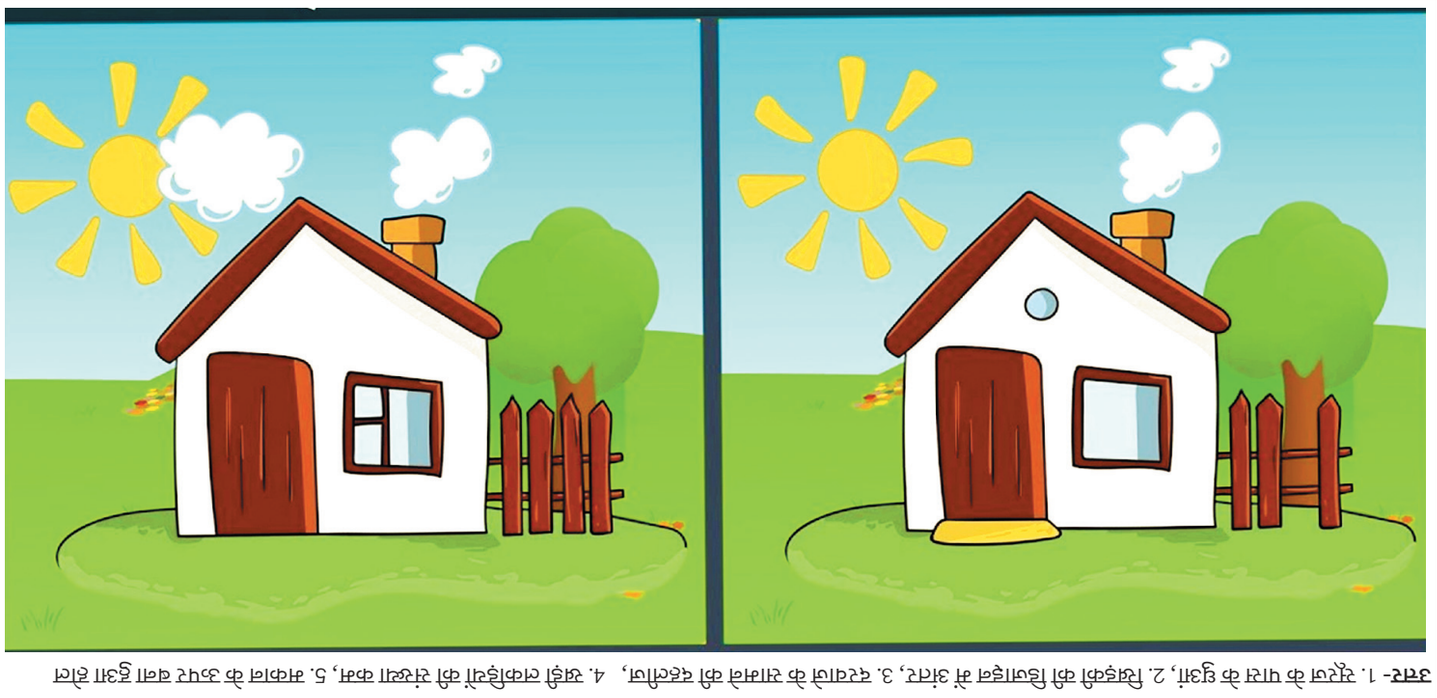

उत्तर- 1. सूरज के पास के धुआं, 2. खिड़की की सिलाइयों में अंतर, 3. दरवाजे के सामने की दहलीज, 4. बाड़ी लकड़ियों की संख्या कम, 5. मकान के ऊपर बना हुआ होल